न्यासोपयोगी शरीर के अङ्ग

न्यास-प्रक्रिया में शरीर के विभिन्न अङ्गो में देव का आवाहन-स्थापन किया जाता है। सन्दर्भ ग्रन्थों में इन अङ्गों के नाम संस्कृत में निर्दिष्ट हैं। साधना के प्रारम्भिक चरण में अङ्गो की स्थिति के ज्ञान में थोड़ी दुविधा हो सकती है इस कारण यहां कुछ अङ्गों के यथासम्भव शब्दार्थ दिये जा रहे हैं जिनकी जानकारी साधकों को सहायक हो सकेगी। यथा,

१. अधर - ओंठ
२. अक्षि - आँख
३. अंघ्रि - पैर
४. अङ्घ्रि - पैर
५. अङ्गुरि - अँगुली
६. अङ्गु - हाथ
७. अरत्निक - कुहनी
८. अलिक्रम - मस्तक
९. अञ्जलि - दोनों खुले हाथों को मिलाकर बनाया हुआ कटोरा, करसम्पुट, हाथ की खुली हथेलियां।
१०. आननम् - मुख
११. आम्नायः - पुण्य-परम्परा,
१२. ओष्ठ - ओंठ
१३. उरः - छाती
१४. ऊरु - जांघ, जंघा
१५. उदरम् - पेट
१६. कटि - कमर
१७. कन्धरा - गला
१८. कर्ण - कान
१९. कटः - कूल्हा
२०. कटिका - कूल्हा, चूतड़
२१. ककुदि - कंधे के ऊपर का कूबड़, उभार।
२२. कटिबंध - कमर
२३. कपालः - खोपड़ी
२४. कफणिः - कोहनी
२५. कफोणिः - कोहनी
२६. कुक्षौ - कोंख, कांख
२७. करभः - हाथ की पीठ
२८. करेटः - अंगुली का नाखून
२९. कण्ठी - गर्दन
३०. कनीनी - आँख की पुतली
३१. कठिनिका - कन्नी उंगली, छोटी उंगली
३२. कूपः - योनि
३३. कूर्परि - कुहनी, कोहनी
३४. ग्रीवा - गला
३५. गुल्फ - ऐड़ी
३६. गण्ड - गाल
३७. गुह्ये - गुदा द्वार, गुप्त स्थान
३८. घ्राणम् - नाक

३९. चिबुक - दाढ़ा, दाढ़ी
४०. जाघनी - घुटना
४१. जघनम् - कूल्हा, चूतड़
४२. जठर - पेट, उदर
४३. जानु - घुटना
४४. जिह्वा - जीभ
४५. जिह्वाग्रे - जीभ का अग्र भाग
४६. दक्षौरौ - दाहिनी जांघ (जंघा)
४७. दंक्षासे - दाहिने कंधे का मूल।
४८. दक्षोरुसन्धौ - दाहिनी जांघ के मूल का सन्धि-स्थान।
४९. दक्ष स्फिचि - दाहिनी जांघ की पसली।
५०. दक्ष चिबुक - दाहिनी दाढ़ी।
५१. दक्षकराङ्गु लिमूले - दाहिने हाथ की अङ्गुलियों का मूल।
५२. दक्षकराङ्गुल्यग्रे - दाहिनी हाथ की अङ्गुलियों का अग्र भाग।
५३. दक्ष पार्श्वे - दाहिनी कांख से नीचे शरीर का भाग जहां पसलियां हैं।
५४. दक्ष गण्डे - दाहिनां गाल में।
५५. दक्ष कूपरि - दाहिनी कोहनी में।
५६. दक्षोरु मूले - दाहिनी जांघ के मूल में।
५७. दक्ष गुल्फे - दाहिनी पैर की एड़ी में।
५८. दशन - दांत
५९. नासिका - नाक
६०. नासापुटे - नथुना
६१. रसना - जीभ
६२. रदन - दांत
६३. ललाटम् - माथा
६४. लोचन - नेत्र
६५. वृषणे - अण्डकोष
६६. वाम सृक्विणि - बायां अण्डकोष
६७. वामोरौ - बायां जांघ
६८. वाम कुक्षौ - बांई कोंख
६९. विन्दौ - ललाट का मध्य भाग
७०. पाणि - हाथ
७१. पुनर्भव - नख
७२. पृष्ठे - पीठ, पिछला हिस्सा।
७३. मुसलः - लिङ्ग
७४. सृक्विणि - अण्डकोष
७५. श्रोणिः - कमर
७६. श्रोत्रम् - कान
७७. श्रोत्रकूपाधः - श्रवण रन्ध्र के नीचे, लुरकी।
७८. स्कन्ध - कन्धा
७९. स्फिच - कुल्हा, चूतड़
८०. शङ्ख - कनपटी की हड्डी।

अन्त में अपनी समस्त भूलों, जाने-अनजाने हुई गलतियों के लिये क्षमा-प्रार्थी हूँ। मेरे गुरुदेव इस अज्ञानी, अबोध बालक को अवश्य क्षमा करेंगे और आश्रय प्रदान करेंगे।

मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि।

एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु॥

- महादेवि ! मेरे समान कोई पातकी नहीं और तुम्हारे समान दूसरी कोई पापहारिणी नहीं है, ऐसा जानकर जो उचित जान पड़े, वह करो।

॥श्रीगुरुचरणार्पणमस्तु॥

धर्मभूषण पं. श्रीधर गौरहा